ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 174-176

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

प्रो० डी० एन० मजूमदार एवं उनके अन्तर्नुशासनीय अध्ययन

प्रो० (डॉ०) सत्या मिश्रा

समाजशास्त्र विभाग, नारी शिक्षा निकेतन पी० जी० कॉलेज, लखनऊ (उ0प्र0), भारत

Received-16.05.2023, Revised-21.05.2023, Accepted-25.05.2023 E-mail: raghwendrap14@gmail.com

सारांशः ***प्रो० डी० एन० मजूमदार भारतीय समाजशास्त्र के लखनऊ सम्प्रदाय के प्रतिनिधि समाजशास्त्रियों में से एक हैं के मूलतः मानवशास्त्री रहे हैं तथापि उनके अनेक अध्ययन समाजशास्त्र में भी प्रासंगिक हैं। उनके अध्ययन बहुआयामी प्रकृति के रहे हैं, जहाँ उनके कुछ अध्ययन विषुद्ध मानवशास्त्रीय रहे हैं यथा सेरोलॉजिकल, जैवमितीय माप पर आधारित अध्ययन एवं पुरातात्विक उत्खनन संबंधी अध्ययन वहीं जाति, प्रजाति, जनजाति एवं ग्रामीण समुदाय संबंधी अध्ययन भारतीय समाजशास्त्र के विकास में अत्यंत उल्लेखनीय महत्व के रहे हैं। डी० एन० मजूमदार ब्रिटिश मानवशास्त्रीय प्रकार्यवादी एवं क्षेत्रकार्य की अध्ययन परम्परा से प्रभावित रहे हैं तथापि उनके अध्ययनों में नृजाति शास्त्रीय उपागम का प्रयोग किया गया है चूँकि उनके अध्ययन आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं और वर्तमान मानवशास्त्रीय एवं समाजशास्त्रीय शोधों का मार्ग प्रशस्त करते हैं अतः प्रस्तुत शोध प्रपत्र में उनके बहुविध अध्ययनों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।***

कुंजीभूत शब्द– अन्तर्नुशासनीय, नृजातिशास्त्र, जाति, वर्ग, ग्राम, प्रकार्यवाद, जनजाति, क्षेत्रकार्य, जैवमिति, सेरोलॉजी, जजमानी।

विश्लेषण– प्रस्तुत शोध प्रपत्र प्रो० डी० एन० मजूमदार के भारतीय समाजशास्त्र के विकास में योगदान का विश्लेषण करता है। इस प्रपत्र में प्रो० मजूमदार के समग्र व्यक्तित्व एवं उनके अकादमिक अवदानों पर दो आयामों से प्रकाश डाला गया है :–

1. जीवन वृतांत 2. कृतित्व एवं समाजवैज्ञानिक योगदान

प्रो० मजूमदार लखनऊ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध समाजशास्त्री राधाकमल मुखर्जी एवं डी० पी० मुखर्जी के समकालीन थे और उनका लखनऊ विश्वविद्यालय में पदार्पण राधाकमल मुखर्जी के आमंत्रण पर 1928 में हुआ। वे लखनऊ विष्वविद्यालय के अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र विभाग में 'प्रिमिटिव इकोनॉमिक्स' के व्याख्याता नियुक्त किए गये। प्रो० मजूमदार की प्रारम्भिक शिक्षा–दीक्षा कलकत्ता में सम्पन्न हुई। इनका जन्म 3 जून 1903 में पटना, बिहार में हुआ। इनकी माता का नाम श्रीमती कुसुम कुमारी तथा पिता का नाम श्री रेवती मोहन मजूमदार था। 1922 में इन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय के कला संकाय से स्नातक की उपाधि ग्रहण की। 1924 में इन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से ही मानवशास्त्र विषय में परास्नातक की डिग्री प्रथम श्रेणी में ग्रहण की। इसी वर्ष वे प्रसिद्ध नृजातिवेत्ता एस० सी० राय के सान्निध्य में आये और अपना प्रथम क्षेत्र कार्य कोल्हन (बिहार) की 'हो' जनजाति के अध्ययन हेतु निष्पादित किया। इन्हें 1926 में कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा प्रेमचंद रॉयचंद छात्रवृत्ति प्रदान की गई। यह सम्मान मौलिक शोध कार्य हेतु उन्हें दिया गया। 1927 में प्रो० मजूमदार का विवाह माधुरी गुहा के साथ सम्पन्न हुआ।

1929 में कलकत्ता विष्वविद्यालय द्वारा उन्हें 'मॉडल स्वर्ण पदक' से पुरस्कृत किया गया। 1933 में वे कैम्ब्रिज चले गए जहाँ उन्होंने प्रो० टी० सी० हैन्डसन के साथ सामाजिक मानवशास्त्र का अध्ययन किया तथा भौतिक मानवशास्त्र का अध्ययन जी० एम० मोरंट के सान्निध्य में किया। वे नियमतः 'लंदन स्कूल ऑफ़ इकॉनॉमिक्स' में मैलिनोटकी द्वारा आयोजित किए जाने वाली संगोष्ठियों में भाग लेते थे। प्रवास के दौरान इन्होंने प्रो० रगलेस गेट्स के साथ 'सीरम विज्ञान' (Serology) का अध्ययन किया तथा लंदन स्थित गाल्टन लेबोरेट्री में भी कार्य किया। कहा जा सकता है कि उन्होंने मानवशास्त्र में व्यवस्थित एवं समग्र प्रशिक्षण प्राप्त किया। 1935 में प्रो० मजूमदार ने कैम्ब्रिज से पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। उनके लघु शोध प्रबन्ध का विषय था– 'कल्चर चेंज अमंग द हो'। 1936 में वे रॉयल एंथ्रोपॉलॉजिकल इंस्टीट्यूट ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एण्ड आयरलैंड' में फैलो चयनित हुए।

प्रो० मजूमदार ने अपने यूरोप प्रवास के दौरान वियना में भारतीय संस्कृति पर श्रृंखलाबद्ध व्याख्यान दिए। जब वे कैम्ब्रिज में थे तब भी इसी प्रकार की व्याख्यान श्रृंखला में अपने वक्तव्य देते थे। 1939 में लाहौर में आयोजित होने वाली 'भारतीय विज्ञान कांग्रेस' के 26वें सत्र में मानवशास्त्र एवं पुरातत्व प्रभाग की अध्यक्षता की। वे 1941 में भारत में 'नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंसेज' में फैलो चुने गए और 1941 में ही संयुक्त प्रांत के जनगणना कमिश्नर द्वारा प्रांत के मानवशास्त्रीय तथा सीरमशास्त्रीय सर्वेक्षण के लिए आमंत्रित किये गये। प्रो० मजूमार की एकमात्र संतान प्रोमिला–कुमकुम का जन्म 1942 में हुआ। प्रो० मजूमदार बहुआयामी वयतिव के धनी थे। जिन्हें 1942 में देहरादून स्थित इंड़ियन सिविल सर्विस ट्रेनिंग सेंटर के सुपरवाइज़र थियोडोर टस्कर ने भारतीय मानवशास्त्र पर व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया जिस पर आधारित पुस्तक 1944 में 'रेसेज़ एण्ड कल्चर्स ऑफ इंड़िया' प्रकाशित हुई। इस पुस्तक का तीन बार पुर्नप्रकाशन भी हुआ। 1945 में इन्होंने 'एथनोग्राफिक एण्ड फोक कल्चर सोसायट, उ० प्र०' की स्थापना की।

मजूमदार ने प्रो० पी० सी० महालनोविस के आमंत्रण पर बंगाल का मानवशास्त्रीय तथा सीरमशास्त्रीय सर्वेक्षण निष्पादित किया। 1946 में उनके दिये गये व्याख्यानों का प्रकाशन 1947 में 'द मैट्रिक्स ऑफ इंड़ियन कल्चर' नाम से प्रकाशित हुआ। इसी दौरान प्रो० मजूमदार ने गुजरात राज्य का मानवशास्त्रीय एवं सीरमवैज्ञानिक सर्वेक्षण किया। 1947 में ही इन्होंने 'द ईस्टर्न एंथ्रोपॉलिजट' की स्थापना अपने संपादकत्व में की। वे 1949 से 1955 के बीच 'मैन इन इंड़िया' पत्रिका के ऑनरेरी संपादक रहे। 1950 में गुजरात शोध समाज द्वारा भारतीय भौतिक मानवशास्त्र में अभूतपूर्व योगदान हेतु सम्मानित किये गये। इसी वर्ष वे लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र विभाग में प्रोफेसर नियुक्त हुए। 1951 में लखनऊ विश्वविद्यालय में नव सृजित मानवशास्त्र विभाग में वे विभागाध्यक्ष नियुक्त हुए। इसके पश्चात वे 1960 तक निरंतर अनेक देशी एवं विदेशी संस्थानों में विभिन्न पदों को सुशोभित करते रहे तथा मानवशास्त्र के

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

बहुआयामी विकास में अपना योगदान दिया। 31 मई 1960 को प्रो० मजूमदार का लखनऊ में निधन हो गया।

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में प्रो० डी० एन० मजूमदार के जीवन वृत्तांत, उनके अकादमिक योगदान के साथ–साथ उनके कृतित्व तथा समाजशास्त्रीय–मानवशास्त्रीय योगदान का भी विश्लेषण किया गया है। इनके अध्ययन के क्षेत्र निम्नवत रहे हैं–

1. मानवशास्त्रीय अध्ययन– (क) भौतिक मानवशास्त्रीय अध्ययन–

(i) सीरमशास्त्रीय अध्यय
(ii) जैवमितीय अध्ययन
(iii) आंटोजेनेटिक अध्ययन
(iv) पुरातात्विक अध्ययन

(ख) सांस्कृतिक मानवशास्त्रीय अध्ययन– प्रजाति, जाति, जनजाति, भारतीय संस्कृति तथा ग्राम अध्ययन

2. समाजशास्त्रीय एवं अन्तर्नुशासनीय प्रकृति के अध्ययन–

(क) आदिम समुदायों का अध्ययन
(ख) ग्रामीण समुदाय संबंधी अध्ययन
(ग) औद्योगिक समाज का अध्ययन

प्रो० मजूदार द्वारा निष्पादित आदिम समुदायों के अध्ययन न केवल मानवशास्त्र में बल्कि समाजशास्त्र में भी अत्यंत महत्व के रहे हैं। इन्होंने बिहार के कोल्हन क्षेत्र की 'हो' जनजाति का, उ० प्र० की कोरवा, धारु, खासा (जौनसार बावर क्षेत्र की) मध्य प्रदेश के बस्तर की गोंड तथा गुजरात की भील जनजाति का अध्ययन किया। इन्होंने अपने 'हो' और 'मुण्डा' जनजाति के अध्ययन के दौरान 'मानावाद' की तर्ज पर 'बोंगावाद' की अवधारणा प्रतिपादित की। उनके अनुसार मैलेनेशिया के लोगों की भाँति 'हो' और 'मुण्डा' जैसी जनजातियों में 'माना' जैसी एक आलोकिक, अदृश्य तथा अवैयक्तिक शक्ति में विश्वास प्रकट करती है जिन्हें 'बोंगावाद' कहा जाता है। प्रो० मजूमदार द्वारा प्रणीत ग्रामीण समुदाय संबंधी अध्ययन समाजशास्त्र में भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इन्होंने उ० प्र० की बख्शी का तालाब तहसील के, लखनऊ जिले के एक गाँव 'मोहाना' (छद्म नाम, वास्तविक नाम गोहानाकलाँ) का समग्रतावादी एवं नृजातिशास्त्रीय अध्ययन किया। इस अध्ययन में इन्होंने ग्रामीण–नगरीय अन्तर्क्रियाओं, अन्तर्ग्राम एवं अन्तर्जातीय संबंधों का अध्ययन किया है। इस अध्ययन पर आधारित पुस्तक 'कास्ट एण्ड कम्युनिकेशन इन एन इंड़ियन विलेज' 1958 में प्रकाशित हुई। इनका दूसरा प्रसिद्ध ग्राम समुदाय का अध्ययन 'छोर का एक गाँव' नामक अध्ययन 1960 में प्रकाशित हुआ। इस अध्ययन में प्रो० मजूमदार ने उ० प्र० के मिर्जापुर जिले की दुद्धी तहसील के थनौरा तथा आस–पास के जनजाति बहुल गाँव में सामुदायिक योजना के प्रभावों का मूल्याँकन किया। इसके अतिरिक्त प्रो० मजूमदार ने जौनसार बावर क्षेत्र के गाँवों का भी अध्ययन निष्पादित किया।

प्रो० मजूमदार के अध्ययन विविधता से युक्त रहे हैं। इन्होंने औद्योगिक समाज का भी अध्ययन किया है 'कानपुर' नगर का उनका अध्ययन प्रसिद्ध रहा है।

प्रो० डी० एन० मजूमदार की उनके कुछ प्रसिद्ध अध्ययनों पर आधारित पुस्तकों को सूचीबद्ध किया गया है–

1 जनजातियों पर आधारित पुस्तकें
– अ ट्राइव इन ट्रांजिशन अ स्टडी इन कल्चर पैटर्नस
– हिमालयन पोलैंड्री
– द फॉर्च्यूनस ऑफ प्रिमिटिव ट्राइब्स
– अफेयर्स ऑफ अ ट्राइब्स
2 ग्रामीण अध्ययनों पर आधारित पुस्तकें
– रुरल प्रोफाइल्स (दो भागों में प्रकाशित; संपादित पुस्तक)
– कास्ट एण्ड कम्युनिकेशन इन एन इंड़िन विलेज
– छोर का एक गाँव
– अ विलेज ऑन द फ्रिंज
3 औद्योगिक समाज के अध्ययन पर आधारित पुस्तक
– सोशल कॉन्टूर्स ऑफ एन इंडस्ट्रियल सिटी (एन० एस० रेड्डी तथा एस० बहादुर के साथ)
4 अन्य–
– रेसेज एण्ड कल्चर्स ऑफ इंड़िया
– द मैट्रिक्स ऑफ इंड़िन कल्चर्स
– रेसरियेलिटीज़ इन कल्चरल गुजरात
– रेषियल प्रॉब्लम्स इन एशिया
– भारतीय संस्कृति के उपादान
– प्रागैतिहास (गोपालशरण के साथ)
– एन इंट्रोडक्शन टू सोशल एंथ्रोपोलॉजी (टी० एन० मदन के साथ)

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

– रेस ऐलेमेंट्स इन इन बंगाल (सहलेखक–सी० आर० राव)

प्रो० मजूमदार आजीवन अकादमिक लेखन एवं शोध में सक्रिय रहे। इनके द्वारा निष्पादित पुस्तक 'इन इंट्रोडक्शन टू सोशल एंथ्रोपोलॉजी आज भी विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के मध्य लोकप्रिय है जिसमें जाति, जनजाति, प्रजाति, जनजातीय समस्याओं, उनके वितरण पर प्रकाश डाला गया है। उक्त पुस्तक इन्होंने टी० एन० मदन के साथ मिल कर लिखा। यह पुस्तक सामाजिक मानवशास्त्र की प्रामाणिक–पारिभाषिक शब्दावलियों पर प्रकाश डालती है। प्रो० मजूमदार ने भारतीय संस्कृति पर व्याख्यान दिये बल्कि अनेक लेख एवं पुस्तकें भी लिखीं। मजूमदार ने भारतीय संस्कृति को समझने हेतु "मार्क" (MARC) की अवधारणा प्रस्तावित की है। MARC का अर्थ है–

M = MAN (मानव)
A = AREA (क्षेत्र)
R = RESOURCES (संसाधन)
C = COOPERATION (सहयोग)

इन चार स्तम्भों द्वारा भारतीय संस्कृति का निर्माण होता है अतः मजूमदार के अनुसार भारतीय संस्कृति की आत्मा को समझने हेतु इन चार तत्वों को समझना आवश्यक है।

प्रो० डी० एन० मजूमदार ने जटिलता से युक्त भारतीय गाँव के विश्लेषण हेतु 'छोर का गाँव' (Fringe Village) की अवधारणा को विकसित करने का प्रयत्न किया। इन्होंने 'छोर का एक गाँव' नामक पुस्तक की भूमिका में छोर के गाँव की आठ विशेषताएँ चिन्हित की हैं–

1. छोर का गाँव बहुजातीय होता है।
2. छोर के एक गाँव में विभिन्न जाति एवं समुदायों के जीवन स्तर में बहुत विषमता नहीं होती अर्थात समरुपता पाई जाती है।
3. छोर के एक गाँव में क्रमिक व मूक सांस्कृतिक आदान–प्रदान अधिक संभव है।
4. छोर के एक गाँव में सरकार का नियंत्रण अधिक प्रभावपूर्ण होता है।
5. छोर का एक गाँव प्रवासियों को आकृष्ट करता हैं
6. छोर के एक गाँव में सामाजिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक अन्तर्क्रियाओं में लोगों की उच्च सहभागिता होती है।
7. छोर के एक गाँव में कबायली क्रमशः प्रवासियों के रीति–रिवाजों को अपना लेते हैं। पर संस्कृति ग्रहण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है।
8. छोर के एक गाँव में घुमन्त या कबायली व्यक्ति होते हैं जिनके द्वारा गाँव के प्रतिष्ठित एवं अग्रणी परिवारों को सम्मान प्राप्त होता है। गाँव में आकर बसे प्रवासी काबायलियों का शोषण करते हैं व प्रायः उनकी भूमि हथिया लेते हैं।

प्रो० मजूमदार ने प्रभुत्वशील जाति की अवधारणा की आलोचना की और भारतीय गाँव के अध्ययन हेतु 'छोर का गाँव' की अवधारणा प्रतिपादित की।

सारांशतः– कहा जा सकता है कि प्रो० डी० एन० मजूमदार ने अपने बहुविध अध्ययनों द्वारा भारतीय समाजशास्त्र तथा मानवशास्त्र को विकसित किया अपने मानवशास्त्र एवं समाजशास्त्र विषयों में प्रशिक्षित विद्यार्थियों की श्रृंखला उत्पन्न की और समाजशास्त्र के लखनऊ सम्प्रदाय को सशक्त बनाया। क्षेत्रकार्य एवं नृजातिशास्त्र जैसी विधाओं को अध्ययन पद्धति के रुप में अपनाये जाने का मार्ग प्रशस्त किया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. माथुर, पाशंकरः 1958, प्राच्य मानव वैज्ञानिक, वॉल्यूम–3, उ० प्र० लोक सांस्कृतिक सभा, लखनऊ।
2. मदन, टी० एन० तथा सरन, गोपालः 1962, इंड़ियन एंथ्रोपोलॉजी एसेज़ इन मेमोरी ऑफ डी० एन० मजूमदार, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई।
3. मजूमदार, डी० एन०: 1958, कास्ट एण्ड कम्युनिकेशन इन एन इंड़ियन विलेज, एशिया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
4. मजूमदार, डी० एन०: 1960, छोर का एक गाँव (अनु० चन्द्र भाल त्रिपाठी), एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई।
5. रावत, हरिकृष्णः 2007, उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोश, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर।
6. रावत, हरिकृष्णः 2014, समाजशास्त्रीय चिंतक एवं सिद्धान्तकार, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर।

*****